International Referred Research Journal,May,2011 ISSN-0975-3486 RNI: RAJBIL 2009/30097 VOL-II *ISSUE 20

शोध पत्र-हिन्दी

May, 2011

सन्त रविदास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

* पूजा रानी

* शोध छात्रा, सिंघानियां विश्वविद्यालय, पचेरी बडी, झुंझनू

tUe LFkku %

सन्त रविदास का नाम और जन्म विवादों के घेरे में है। रविदास जी का जन्म 1433 विक्रमी की माघ पूर्णिमा के दिन रविवार को हुआ था। उनका निर्वाण सवंत–1584 विक्रमी में माना जाता है। सन्त रविदास की जन्म तिथि और मृत्यु तिथि का किसी भी स्थान पर कोई वर्णन हमें नहीं मिलता है। केवल रविदास सम्प्रदाय के सन्तों का यह कहना है कि माघ पूर्णिमा को रविवार के दिन रविदास उत्पन्न हुए थे।

डॉ0 रामकुमार वर्मा ने भी सन्त रविदास की आयु 120 वर्ष मानी है। सन्त रविदास के गुरू का नाम स्वामी रामानन्द बताये जाते हैं। रामानन्द के बारह शिष्यों में रैदास का नाम लिया जाता है।

रैदास (रविदास) रामानन्द की शिष्य परम्परा में थे। कबीर के समकालीन सन्तों में इनका नाम बडे आदर से लिया जाता है। आप कदाचित् आयु में कबीर से बडे थे। इन्होंने स्वयं अपनी जाति चमार बताई है–

'' कह रैदास खलास चमारा।''

इनके महत्व को बढ़ाने के लिए इन्हें पूर्व जन्म में ब्राहम्ण बताया गया है। ऐसा प्रसिद्ध है कि ये नित्यप्रति ढोरों का व्यवसाय करते हुए माया का परित्याग करके भगवद्दर्शन में समर्थ हो सके थे। मीराबाई ने इन्हें अपने गुरू के रूप में स्मरण किया है। चमार जाति के लोग अपने आपको रविदासी कहते है।

इनमें सन्तों की सहज सरलता, उदारता, निस्पृहता, सन्तुष्टि और तितिक्षा आदि गुण थे। ये भगवत् प्राप्ति के लिए अंहकार की निवृति को आवश्यक मानते थे। कबीर के समान इनके भी ईश्वर निराकार थे। इन्होंने सगुण ने होकर निर्गुण हैं। इनकी भक्ति प्रेम– भाव की है। कबीर का माधुर्य भाव भी अभीष्ट है। इनका कहना है कि उस परमात्मा का यथार्थ परिचय केवल सुहागिन ही प्राप्त कर सकती है। क्योंकि वह अपने आपको सर्वात्सना भावेन अर्पण कर देती है।सच्चे हृदय से निकले हुए भक्त के अत्यंत सीधे उद्गार और सत्य के प्रति दृढ़ रहने के उपदेश कितने शक्तिशाली हो सकते हैं, यह नानक की वाणियों ने स्पष्ट कर दिया हैं। इनकी कविता का एकाध नमूना देखिये–

jiu xokbl lkb d] fnol xokb;k [kk;A
ghj tlk tUe g] dmMh cny tk;AA

दादू की कविता का एक नमूना देखिये, जिसमें उनके मत का सार समाहित है–

vkik eV gfj Hkt] ru eu rt fodkjA
fucjh lc tho lk] nkn ;g er lkjAA

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी रामानन्द को रविदास का गुरू स्वीकार किया है। उनके अनुसार ''रामानन्द के बारह शिष्य थे, जिनमें कई निम्न कही जाने वाली जातियों में उत्पन्न हुए थे इनमें से रैदास और कबीर बहुत प्रसिद्ध हुए।

jpuk,¡ ¼dfrRo½ %

सन्त रविदास अनपढ़ थे। सन्त रविदास भक्ति भावना से ओत–प्रोत होकर अपनी अटपटी वाणी में गाते थे। वही उनकी कविता बन जाती थी।

उनके द्वारा रचे गये पदों की संख्या के बारे में कोई अनुमान नहीं लगाया जा सकता। उनका कोई प्रामाणिक संग्रह भी नहीं निकाला गया है। इस प्रकार सन्त रविदास की रचनाएँ 'फुटकल' रूप में ही मिलती हैं। उनकी रचनाओं का विभाजन निम्न प्रकार से किया जा सकता है –

1. प्रकाशित संग्रह ग्रन्थ।
2. अप्रकाशित संग्रह ग्रन्थ।
3. सर्वाधिक प्रामाणिक ग्रन्थ।

गुरू ग्रन्थ साहब में इनके 40 के लगभग पद मिलते है।

गुरू ग्रन्थ साहब में संकलित इनके पद अधिक प्रामाणिक माने जाते है इसका कारण यह है कि सिक्ख लोग गुरू ग्रन्थ साहब का आदर करते हैं। इसी कारण इसमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं किया गया।

सन्त रविदास और उनके काव्य में 6 साखियाँ और 47 पद मिलते हैं। कुछ फुटकर रचनाओं का संग्रह रविदास जी की वाणी है। इसमें 6 साखियाँ और 86 पद संकलित हैं। ये पद गुरू ग्रन्थ साहब में आये हुए पदों से मिलते है।

vidkf"kr dk0; lxg %

सन्त रविदास की हस्तलिखित सामग्री और यत्र–तत्र बिखरी हुई वाणियाँ मिलती हैं।दादू महाविद्यालय जयपुर और नागरी–प्रचारिणी सभा काशी में हस्तलिखित सामग्री का संग्रह किया गया है।

fu"d"k %

इस प्रकार रविदास की मूल रचनाओं का संग्रह अभी तक नहीं मिला है। जो भी संग्रह मिला है उनकी बहुत सी रचनाएं एक जैसी दिखाई पड़ती हैं। केवल भाषा का अन्तर है।